पंरपरागत चिकित्सा पद्धति की उपादेयताः एक वैयक्तिक अध्ययन

डॉ.आर.एन. शर्मा,
विभागाध्यक्ष, समाज शास्त्र एवं समाजकार्य
श्री सांई बाबा आदर्श महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़
rns.doublephd @gmail.com

संक्षेपिका–

''पण्डो'' जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के जनजातिय बहुल 'सरगुजा' संभाग में निवास करती है। संभाग के कुल 19 विकास खंड में से 11 विकास खंडों में इनकी कुल जनसंख्या 31,816 है। मानव सभ्यता के विकास के क्रम में ये पिछड़ी अवस्था में हैं। जिले के सुदूर क्षेत्रों, वनों में इनका निवास हैं। ये स्वयं को महाभारत काल के पाण्डों के वंशज मानते हैं। इस में पितृसत्तामक परिवार पाया जाता है। ये कई गोत्र एवं उप गोत्रों में है। इनके घर प्रायः मिट्टी के बने होते हैं। इनके प्रमुख आर्थिक स्रोत कृषि, वनोपज संग्रह, मजदूरी इत्यादि है। इनके सामाजिक आर्थिक विकास के लियें पण्डों जनजाति अभिकरण का गठन किया गया है। इनके प्रमुख आराध्य – सतबहनियां, बूढ़ी माई, महामाया, समलाया, बूढ़ादेव, ढहरिया देव तथा भैरव बाबा आदि हैं। इनके परंपरागत चिकित्सकों कों बैगा व गुनिया कहा जाता है। इनमें शिक्षा दर बहुत ही कम है। ये अभी भी विकास से कोसों दूर जीवन निर्वाह कर रहे हैं। ''पण्डो'' अपने स्वास्थ्य समस्याओं के निराकरण हेतु अपने परम्परागत चिकित्सा ज्ञान पर भी निर्भर है। प्रस्तुत शोध पत्र में परम्परागत चिकित्सा पद्धति के प्रति आधुनिक चिकित्सकों एवं कुछ रोगियों के दृष्टिकोण को वैयक्तिक अध्ययन से प्रस्तुत किया गया है। परम्परागत चिकित्सा पद्धति जनसमूह के सामाजिक आचार–विचार व प्रथागत मान्यताओं के रूप में विद्यमान हैं। परम्परागत चिकित्सक अपने ईलाज से पूर्ण उपचार का दावा करते हैं। इस सम्बन्ध में उस क्षेत्र में कार्यरत् आधुनिक चिकित्सकों से यह जानने का प्रयास किया गया है कि परम्परागत चिकित्सा पद्धति रोग निवारण में कहां तक कारगर है, परम्परागत चिकित्सा पद्धति की व्यावहारिक उपयोगिता कितनी है। अध्ययन क्षेत्र में बैगा गुनियों से ईलाज करा रहे/करा चुके रोगियों से भी यह जानने का प्रयास किया गया कि उन्हें उपचार से क्या लाभ हुआ है। वैयक्तिक अध्ययन के दौरान उस क्षेत्र में कार्यरत् आधुनिक चिकित्सकों से तथा रोगियों से इस सम्बन्ध में शोद्यार्थी द्वारा आवश्यक जानकारी संग्रहित कर शोध पत्र में प्रस्तुत किया गया है।

मुख्य शब्द– परम्परागत चिकित्सा पद्धति, बैगा–गुनिया, वनोषधियां